डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2014-2017
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

संस्कार सागर

• वर्ष : 17 • अंक : 200
• जनवरी 2016
• मूल्य : 15 रु.

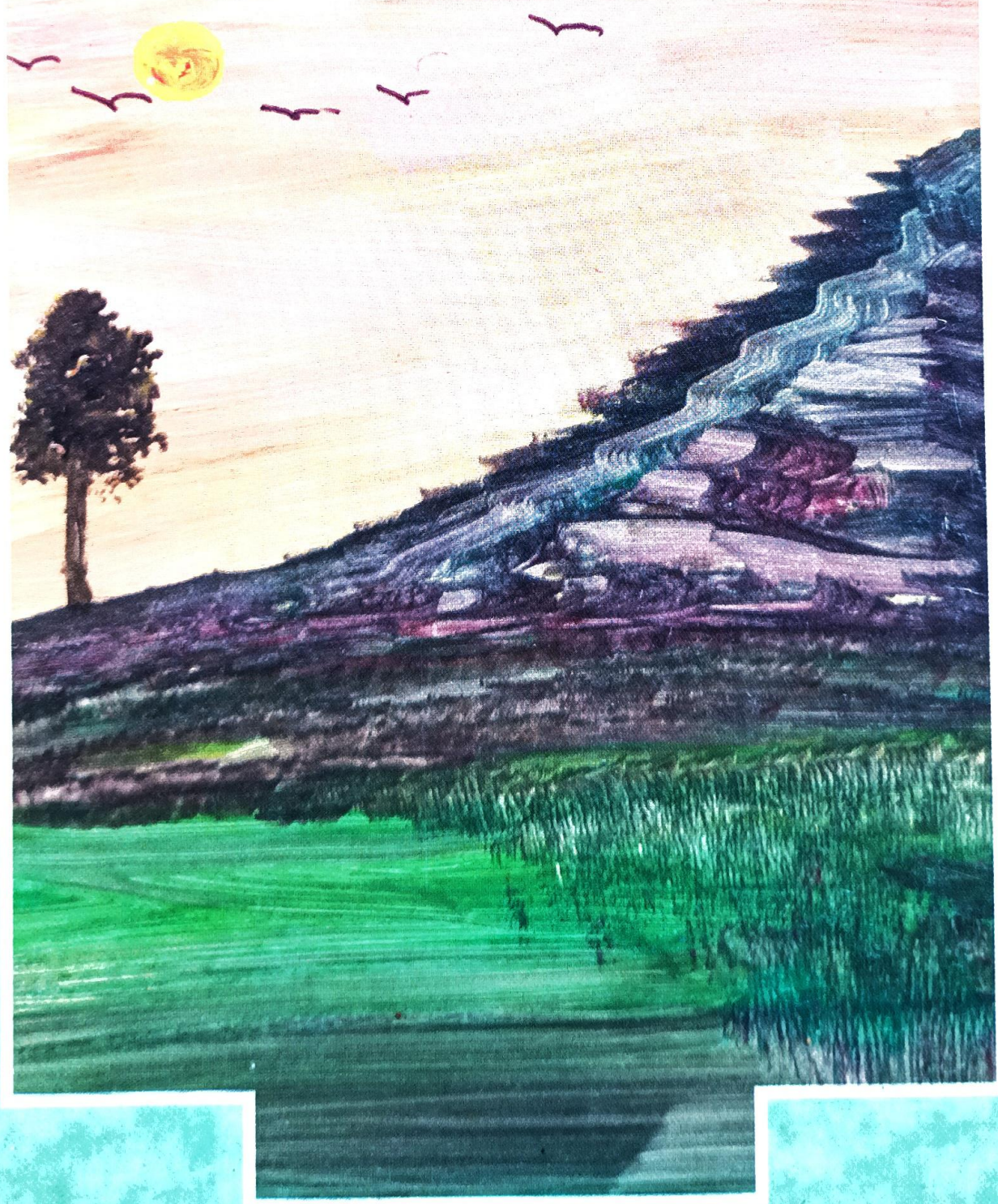

प्राचीन जैन तीर्थ नंदपुर शिलालेखों के दर्पण म

• हरिविष्णु अवस्थी, टीकमगढ़ •

बुन्देलखण्ड के सर्वप्राचीन ओरछा राज्य के विभिन्न नगरों ग्रामों में उपलब्ध लेखों संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी मेरे पास वर्षों से सुरक्षित थी। इनमें से कुछ शिलालेखों का प्रकाशन समय–समय पर स्थानीय दैनिक समाचार–पत्र **'ओरछा टाइम्स'** के माध्यम से होता रहा।

कुछ वर्ष पूर्व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो0 डॉ0 बी0 एल0 भादानी ओरछा नगर की वास्तु संबंधी प्राचीन ऐतिहासिक जानकारी की तलाश में मेरी कुटिया पर पधारे। उसी समय ओरछा नगर के शिलालेखों के साथ ही साथ प्राचीन ओरछा राज्य (वर्तमान टीकमगढ़ जिला, मध्यप्रदेश) के शिलालेखों का संकलन भी उन्हें दिखाया। डॉ. भादानी जी ने उनका प्रकाशन करने हेतु मुझे प्रोत्साहित किया तथा उनके प्रकाशन में यथा–योग सहयोग प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।

हमारे संकलन में जैन तीर्थ अहार के मात्र दो शिलालेख ही थे। जबकि मैंने स्वयं वहां अनेक मूर्तियों की पाद पीठिका पर अंकित शिलालेख देखे थे। अहार क्षेत्र के शिलालेखों संबंधी एक पुस्तक मुझे अहार क्षेत्र के मंत्री पं जय कुमार शास्त्री पठा वालों की कृपा से प्राप्त हुई।

इस पुस्तक में अहार क्षेत्र में उपलब्ध सभी छोटे–बड़े शिलालेखों का विवरण दिया गया है। भगवान शांतिनाथ के भव्य एवं विशाल प्रतिमा की पाद–पीठिका पर मार्ग सुदि 3 शुक्रवार संवत् 1237 वि0 का एक लेख अंकित है। इस शिलालेख में देवपाल के पुत्र रत्नपाल द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा के उल्लेख के साथ ही वाणपुरे एवं नंदपुरे नामक स्थानों में भी पूर्व में मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख है। इनमें वाणपुरे नगर तो वर्तमान समय में टीकमगढ़ नगर से मात्र 10 कि0मी0 दूर स्थित है किन्तु नंदपुरे स्थान की पड़ताल अब तक नहीं हो सकी थी। यहां के एक शिला में महिशणपुरे का भी उल्लेख है। इसकी भी पडताल अब तक नहीं हो सकी। भगवान शांतिनाथ के पाद पीठ पर 9 पंक्तियों में अंकित शिलालेख की चौथी पंक्तिः –

यो दिष्टया नंद पुरे परः परनरानंद प्रदःष्रीमता येनश्री मदनेस सा (कमल पुष्प) गुरपुरे तज्जन्मनो निर्म्मिमे सोयं श्रेष्ठि वरिष्ठ गल्हण इतिश्वरी रल्हणख्याद

कई महीनों के परिश्रम के फलस्वरूप सन् 2014 में मेरी शिलालेखों संबंधी पुस्तक 'बुन्देलखण्ड के शिलालेख' प्रथम भाग ओरछा राज्य प्रकाशित हुई। अनेक विज्ञजनों ने

बुंदेलखण्ड की पूर्व देशी रियासतों से संबंधित ऐसी ही पुस्तक की रचना का परामर्श एवं आशीर्वाद दिया। प्रोत्साहित होकर मैने वर्तमान जिला छतरपुर (मध्यप्रदेश) के शिलालेखों पर कार्य करने का निर्णय लिया। ज्ञातव्य है कि वर्तमान जिला छतरपुर में बुंदेलखण्ड के पूर्व देशी राज्य विजावर, लुगासी, आलीपुरा, छतरपुर, आदि अनेक राज्य शाामिल हैं।

शिलालेखों संबंधी जानकारी जुटाने का अभियान मैंने छतरपुर जिले में नौगांव के निकट स्थित राजकीय धुबेला म्यूजियम से आरंभ किया। इसमें प्रदर्शित मूर्तियों आदि में अंकित शिलालेखों को नोट किया। इनमें चार–पांच शिलालेख जैन धर्म की पाद पीठिका पर अंकित है। प्राप्त सूचना के अनुसार इन मूर्तियों को जिस ग्राम मऊ (सहानिया) में धुबेला संग्रहालय स्थापित है उसी से संग्रहालय में लाया गया था।

धुबेला संग्रहालय के शिलालेखों का विवरण लेने पश्चात् मैने विश्व प्रसिद्ध पर्यटक स्थल खजुराहो का रुख किया। खजुराहो के अधिकांश शिलालेख प्रकाशित हैं। मेरा विचार था कि शिलालेखों के फोटोग्राफ भी यदि उनके विवरण के साथ संलग्न रहेंगे तो पाठकों को उनसे अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही खजुराहो जाना हुआ।

खजुराहो के वैष्णव एवं शैव्य मंदिरों के समूह के शिलालेख के फोटोग्राफ लेकर पुरातत्व संग्रहालयों का अवलोकन करने पश्चात् जैन मंदिर समूह की ओर रुख किया। जैन मंदिर समूह की अनेक मूर्तियों की पाद पीठिका पर लेख अंकित हैं। दुर्भाग्यवश कैमरा की बैटरी डिस्चार्ज हो जाने कारण उनके चित्र तो न ले सका, किंतु उन सभी शिलालेखों के विवरण नोट कर लिए। इस परिसर में साहू शाांति प्रसाद जैन कला संग्रहालय स्थापित है। जो अपनी भव्यता में अद्वितीय हैं।

अपने गृहनगर वापिस लौटने पर शिलालेखों को व्यवस्थित कर छतरपुर जिले के अन्य स्थानों पर उपलब्ध शिलालेखों के सम्बन्ध में अपने परम मित्र, बुन्देलखण्ड इतिहास के अधिकारी विद्वान डॉ. काशी प्रसाद जी त्रिपाठी से चर्चा करने हेतु उनके यहां गया। त्रिपाठी जी की बैठक में टेबिल पर 'संस्कार सागर' मासिक पत्रिका का माह जून 2015 ई. का अंक रखा था। जब तक वे बैठक में आते में पत्रिका के पृष्ठ पलटने लगा।

पत्रिका में डॉ. त्रिपाठी का एक लेख – 'श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ नंदपुर' देखकर उसे आद्योपांत पढ़ गया। वहां के शिलालेखों से उसकी प्राचीनता एवं वैशिष्ट्य की अनुभूति हुई। इसके पश्चात् इस स्थान की प्राचीनता आदि के संबंध में डॉ. त्रिपाठी जी से गंभीर चर्चा हुई।

अहार क्षेत्र के एक शिलालेख में नंदपुर तथा एक शिलालेख में महिषाणपुर नामों के उल्लेख होने का सहज ही मुझे स्मरण हो आया। डॉ. त्रिपाठी के अकाट्य तर्कों ने मुझे प्रभावित किया। उन्हें सुनकर नवागढ़ नंदपुर नामक स्थान को स्वयं अपनी दृष्टि से देखने की इच्छा बलवती हो गई। डॉ. त्रिपाठी जी से जब मैंने अपनी उस स्थान को देखने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने मुझे बा0 ब्र0 श्री जयकुमार जी जैन 'निशान्त' प्रति ठाचार्य से सम्पर्क करने हेतु उनका दूरभाष नम्बर नोट कराया। निशान्त जी से सम्पर्क किया। श्री निशान्त जी ने उस स्थान की भौगोलिक स्थिति से अवगत कराया। मैंने टीकमगढ़ से दो पहिया वाहन से नवागढ़ जाने का निश्चय किया। श्री निशांत जी ने वहॉ के व्यवस्थापक को सहयोग करने हेतु पत्र लिख दिया।

अपने एक युवा मित्र के साथ मोटर साइकिल से नवागढ़ पहुंचा उस छोटे से ग्राम में प्राचीन विशाल जैन तीर्थ के दर्शन कर में स्तब्ध रह गया। व्यवस्थापक के सहयोग से एक एक खण्डित मूर्ति एवं स्तंभों को देखा।

शिलालेखों का विवरण निम्न अनुसार है।

यहां कुल 21 शिलालेख देखने को मिले जिनमें मात्र 8 शिलालेख ही पठनीय हैं यथा–

1– भगवान महावीर की खण्डित प्रतिमा पर सं0 1195 का लेख अंकित है। इसमें महिचंद पत्नी तिसुदि पुत्र देहल्ण पुत्र वधू वील्हा के नामों का उल्लेख है।

स (संवत्) 1195 गोला पूर्वान्वये साहु (शाह) महिचंद्रभार्या तिसुदि तत्सुत साहु (शाह) देल्हणवधु वील्हा मामी सल्हा ऐते प्रणमंति।।

2– एक अलंक त स्तंभ पर संवत् अंकित नहीं है। इस पर साहु (शाह) महिचंद पुत्र साहु देल्हण का नाम उल्लेख है।

साहु (शाह) महिचन्द पुत्र साहु

1. देल्हण केन (तेन) कादीन्।

शाह महिचन्द्र के पुत्र देल्हण द्वारा यह निर्माण कार्य कराया गया।

3– एक मानस्तंभ पर सं0 1203 अंकित है। इसमें साहु(शाह) रासल सुत लुल नामों का उल्लेख है।

1. संवतु (संवत्) १२०३ अषाढ वदि १० गोला –
2. पूर्व्व अन्वे साहु (साह्) रासल सुत लुल

4– द्वितीय मानस्तंभ पर भी सं. 1203 अंकित है। इसमें रामचंद सुत बालु का उल्लेख है।

1 – संवत् (1203) असढ़ (असाढ) वदि 10 गोलापूर्व अ–

2 – न्चे सावु (साह) रामचंद्र सुत बालु।

प्रशस्ति के आलोक में संवत् 1203 में गोलापूर्व अन्वय के साह रामचंद्र के पुत्र बालु ने इसे बनवाया और प्रतिष्ठित कराया था।

5– तृतीय मानस्तंभ पर भी सं. 1203 अंकित है इसमें रासल पुत्र शांति का उल्लेख है।

1. संमतु (संवत्) 1203 अषाढ वदि 10 बुदो (बुधौ) गौ–

2.लापूर्व अन्चे साबु (साह) रासल सुत शांति (शांति) ।

इस प्रशस्ति के आलोक में इस मानस्तम्भ की प्रतिष्ठा संवत् 1203 में गोलापूर्व शाह रासल के पुत्र शान्ति से कराई ज्ञात होती है।

6– एक चौथा स्तंभ भी है। इस पर सं0 1203 अंकित है। इसके नाम अपठनीय हैं।

1. स. संवत् 1203.....(अषाढ वदि) 10 गो. (गोलापूर्व)

इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है इस मानस्तम्भ का निर्माता भी गोलापूर्वान्वयी रहा है। इस प्रकार चारों मानस्तम्भ गोलापूर्व जैन समाज की भक्ति और श्रद्धा के प्रतीक हैं।

7– पूर्णतः खण्डित एक मूर्ति की पादपीठिका पर संवत् अंकित नहीं है। संभव है वह मूर्ति के खण्डित भाग में रहा हो। इसमें साहू (शाह) वील्हा तस्यसुत लषम् का उल्लेख है।

1. सावु (साह) वील्हा तस्य सुत 'लषम्।

2. अंबिका प्रलामति (प्रणमति) ।

शाह वील्हा के पुत्र लखम ने अंबिका के चरण स्थापित कर उसे वह प्रणाम करता है।

8– भगवान शाांतिनाथ की खण्डित मूर्ति की पाद पीठिका पर सं. 1202 अंकित है। इसके नीचे बाईं ओर 2 पंक्तियों में पहली पंक्ति में गोला पूर्वान्वय तथा उसके नीचे सलदेमल अंकित है। उसी के सामने दाहिनी ओर दो पंक्तियों में पहली पंक्ति में साहू(शाह) के विवय सुतस्य आमल अंकित है।

दायीं ओर	बाई ओर
संवतु 1202 गोला दो हरिण	सावु (साहू) के विवय सु–
(पूव्व) अन्वे भ्राना सलंदेमल	तस्य आसल

इन शिलालेखों के कुछ नाम ऐसे लगे जैसे इसके पहले मेरे द्वारा देखे गए अहार धुबेला एवं खजुराहो के शिलालेखों में भी इनसे मिलते–जुलते नाम हों।

मंदिर के निकट स्थित एक छोटी सी पहाड़ी पर एक सर्वांग सुन्दर राजसी वेशभूषा में एक मूर्ति देखने को मिली। इस मूर्ति में अंकित राजसी व्यक्ति द्वारा दाढी मूंछ रखी गई है। मूर्ति में ऊपर की ओर एक छोटे आकार की जैन प्रतिमा बनी हुई थी। बहुत देर तक ध्यानपूर्वक देखता रहा। दिमाग को इधर–उधर घुमाया तो याद आया की इसी तरह की दाढी–मूंछ वाली प्रतिमा मुझे अहार और खजुराहो में भी देखने को मिली थी।

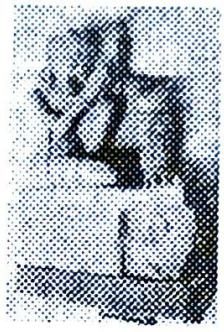

इतनी सुन्दर प्रतिमा को मंदिर में स्थान क्यों नहीं मिला? इस प्रश्न उठ खड़ा हुआ सोचता रहा । एक हल (सही हो या गलत) यह समझ में आया कि यह मूर्ति की वेशभूषा से तो लगा मानो यही यहां प्राचीन जैन तीर्थ स्थल के निर्माता श्रेष्ठि हों।

इसके पश्चात् चित्रित शैलाश्रय और उसमें बने रंगीन रेखांकनों को देखकर अवाक रह गया। किसी चित्रित शैलाश्रय को देखने का यह मेरा प्रथम अवसर था। इतिहास का छात्र होने के नाते शैलाश्रयों की प्राचीनता के संबंध में थोड़ा बहुत पढ़ा था। इस शैलाश्रय को देख कर इस स्थान की प्राचीनता के संबंध में अन्य किसी साक्ष्य की आवश्यकता शेष ही नहीं रह जाती।

बातों–बातों में पथ प्रदर्शक से भैंसवारी नाम के गॉव का नाम सुनने को मिला। माथा ठनका। कहीं अहार के शिलालेख में अंकित महिषणपुर ही तो नाम बदलकर भैंसवारी (भैंसावारी–भैंसावानी)तो नहीं हो गया? सोचा जब वसुहाटिका और मदनेशसागरपुर के स्थान पर अहार नाम हो सकता है तो महिषणपुर का भैसवारी और नंदपुर का नवागढ़ क्यों नहीं हो सकता । इसी तरह की विचारों में डूबता उतराता टीकमगढ़ की ओर वापिस लौट पड़ा।

दूसरे दिन नोट बुक उठाकर धुबेला एवं खजुराहो के शिलालेखों को प्रथम प्रथक पत्रों पर नोट किया। अहार क्षेत्र के शिलालेख पुस्तक खोलकर सामने रखी। नवागढ़/नंदपुर के शिलालेखों में 1–महिचंद उसकी पत्नी 2–तिसुदि उसके पुत्र 3–देहल्ण तथा पुत्र वधू 4–बील्हा। (महिचंद एवं पुत्र देल्हण के नामके पुनरावृत्ति एक शिला लेख में और हुई है) 5– रासल 6–पुत्र लुल 7–रामचंद 8–सुत बालु 9–सांति (रासल पुत्र) 10–वील्हा 11 पुत्र लषम् 12 विवय 13 सलदेमल 14 विवय 15 पुत्र आमल कुल 15 नामों का उल्लेख है।

खजुराहो के संवत् 1215 के संभवनाथ भगवान के शिलालेख में महिचंद नामका उल्लेख देखकर नवागढ़ के महिचंद का स्मरण हो आया। इस शिलालेख में महिचंद के अतिरिक्त उसके अन्य भाईयों–महागण,सिरीचंद,जिनचंद एवं उदयचंद के नामों का भी उल्लेख है। इस प्रकार संवत् 1195 में भगवान महावीर की नवागढ़ (नंदपुर) मूर्ति को प्रतिष्ठा कराने वाले महिचंद पकड़ में आये।

4– ओं।। सम्वत् 1215 माघसुदि 5 श्रीमन्मदनवर्म्मदेव प्रवर्द्धमानविजयराज्ये।। ग्रहपतिवंसे (शे) श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्रपाहिल्लः। पाहिल्लांगरुहसाधुसाल्हे (ते) नेदं (य) प्रतिमाकारितेति ।। ।। तत्पुत्राः महागण। महीचन्द्र । सि (रि) चन्द्र । जिनचन्द्र। उदयचन्द्र प्रभृति । सम्भवनाथं प्रणंमति नित्यं ।। मंग (ल) महाश्री (:) ।। रूपकार रामदेव महाश्री (:) ।।

महिचंद के पूर्व वर्णित एक भाई जिनचंद द्वारा संवत् 1209 में धुबेला में भगवान शांतिनाथ की तथा संवत् 1215 में खजुराहो में भी मूर्ति प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख शिलालेखों में देखने को मिला। महिचंद के ही एक भाई उदयचंद ने संवत् 1203 में धुबेला में भगवान शांतिनाथ की प्रतिष्ठा कराई और एक मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत् 1215 में खजुराहो में तथा संवत् 1237 में अहार में शांतिनाथ की प्रतिष्ठा कराई। ज्ञातव्य के उदयचंद महिचंद के भाइयो में सबसे छोटा था। महिचंद एवं उसके भाई जिनचंद तथा उदयचंद द्वारा नवागढ़,धुबेला,खजुराहो एवं अहार आदि विभिन्न स्थानों में मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराया जाना उस परिवार की धन सम्पन्नता तथा उस परिवार के वैभव का प्रतीक है।

यह लेख शान्तिनाथ की काले पाषाण की खड्गासन प्रतिमा (160X56 सेमी. ,संग्रहालय क्रमांक 24) के पादपीठ पर उत्कीर्ण है।

1 सिद्ध गोलापूर्व्वान्वये साधु स्वयंभूधर्म्मवत्सल। तत्सुतौ स्वामिनामा च देवस्वामिगुणान्वितः।। 1 देवस्वामि–

2 सुतौ श्रेष्ठौ सु (शु) भचद्रोदयचंद्रक. (कौ) । कारित च जगन्नाथं शान्तिनाथं जिनोत्तम।। 2 धर्म्मासे (शे) पि १४ ।

3 तथा दुम्बरान्वये साधुजिनचंद्रतत्पुत्रहरिम्च (न्द्र) तत्सुतलक्ष्मीधर श्री सा (शा)–न्तिनाथ प्रणमति सरा. (दा) ।

4 लक्ष्मीधरस्य धर्म्म संधिज श्रीमन्मदनवर्म्मदेव–राज्ये संवत्१२०३ फा0 सुदि ६ सोमे।

नवागढ़ के एक शिलालेख में वील्हा पुत्र लषम का नामोल्लेख है। ज्ञातव्य है कि लषम के नाम का उल्लेख धुबेला में संवत् 1199 में प्रतिष्ठित भगवान् नेमिनाथ की पाद पीठिका पर भी है।

यह लेख बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ की काले पाषाण की प्रतिमा (संग्रहालय क्रमांक 7) के पाद पीठ पर उत्कीर्ण है। प्रतिमा मस्तक विहीन है तथा चार टुकड़ों में खण्डित है। लेख की भाषा संस्कृत और लिपि नागरी है।

1. गोल्लापूर्व्वकुले जातः साधुर्व्वा (ले) (गुणा+) न्वितः। तस्य देवकरो पुत्रः पद्मावतीप्रियाप्रियः।। (१) तयोर्जातो सुतौ सि (शि)–

2. स्तौ (टौ) सी (शी) लव्रतविभूषितौ। धर्म्मा– चाररतौं नित्यं ख्यातौ म (ल्ह)णजल्ह(णौ)।।

(२) मल्हणस्य व (धूरासीत्स) त्यसी (श) ला पतिव्रता।

श्रेष्ठिवीवीतनूजा च प्रबुद्धा वि (वि) नयान्विता ।। (३) लषम (क्ष्म) णाद्यास्तया जाताः पुत्राः गुण (गणान्विताः)

.....ढ्या जिनचरणाराधनोद्यता ।। (४) कारितश्च जगन्नाथ (नेमि) नाथो भवातकः । त्रै (लोक्यश) रणं देवो जगन्मगलकारकः।। (५) सम्वतु (त्) 1199 वैशाख सुदि 2 रवौ रो (हिण्याम्+)

खजुराहो के संवत् 1215 के एक शिलालेख में महिचंद भाईयों के पूर्वजों के नामों का उल्लेख इस प्रकार है– देदू–के पुत्र पाहिल, पाहिल के पुत्र साल्हे और साल्हे के पॉच पुत्र महागण, महीचंद, सिरीचंद, जिनचंद एवं उदयचंद के नामों का उल्लेख है। इस विवरण से स्पष्ट होता है महीचंद के पूर्वज, धर्मपरायण, धन वैभव से एवं तत्कालीन शासकों के विश्वास पात्र रहे। उपर्युक्त नवागढ़, धुबेला, खजुराहो एवं अहार के शिलालेखों में आये नाम एक दूसरे से पूर्णतः समबद्ध है। स्पष्ट है कि महीचंद ने अपने भाइयों की भांति ही खजुराहो एवं प्राचीन नंदपुर (वर्तमान नवागढ़) में प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराई थी। धुबेला, खजुराहो, अहार एवं वर्तमान नवागढ़ पूर्व नाम में नंदपुर के लगभग केन्द्र में अहार क्षेत्र है। जहां से धुबेला,नवागढ (प्राचीन नंदपुर) की दूरी लगभग बराबर है। खजुराहो इन दोनों स्थानों की तुलना में अहार से थोड़ा दूर पड़ता है।

उपर्युक्त वर्णित स्थानों एवं वहां उपलब्ध शिलालेखों में प्राप्त विवरणों का अध्ययन करने पर निष्कषतः मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि वर्तमान नवागढ़ ही पूर्व का नंदपुर ही। आवश्यकता नहीं कि पाठक मेरी मान्यता को स्वीकारें ही। ■

समाधिमरण

सोनागिर। दिनांक 7 दिसम्बर 2015 को सोनागिर जी में आचार्यश्री चैत्यसागरजी महाराज की संघस्थ शिष्या महोत्सव श्री माताजी का समाधिमरण हो गया जिनका अंतिम संस्कार दिनांक 8 दिसम्बर 2015 को सोनागिरजी में ही हुआ। ■